डॉ·व्यं·वि·द्रविड
एम्·ए·(संस्कृत,मराठी,हिन्दी) पीएच·डी·
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्र मा ण प त्र

मैं डा·व्यं·वि·द्रविड, कोल्हापुर यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री·प्रकाश ज्ञानदेव गायकवाड ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध, "पंडित लक्ष्मीनारायण मिश्र के 'सिंदूर की होली' नाटक के अंतर्गत समस्याएँ - एक अनुशीलन" मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। श्री·गायकवाड के शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

शोध निर्देशक के हस्ताक्षर

कोल्हापुर
30 जून, 1994

Reader and Head
Department of Hindi,
Shivaji University,
Kolhapur - 416004

प्र स्था प न

"पंडित लक्ष्मीनारायण मिश्र के 'सिंदूर की होली' नाटक के अंतर्गत समस्याएँ - एक अनुशीलन"

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्.(हिन्दी) के प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर.

30 जून, 1994

(श्री.प्रकाश ज्ञानदेव गायकवाड)

शोध-छात्र के हस्ताक्षर

प्रा क्क थ न

श्री लक्ष्मीनारायण मिश्र हिन्दी के एक विख्यात एवं आधुनिक नाटककार हैं। इन्होंने सामाजिक समस्या-प्रधान तथा संस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों का निर्माण कर हिन्दी नाट्य्-साहित्य की श्रीवृद्धि की है। वे समस्या नाटक के उद्भावक हैं। हिन्दी नाट्य्-साहित्य को नूतन दृष्टि प्रदान करने का श्रेय इन्हीं को है। आधुनिक हिन्दी नाटककारों में सर्वप्रथम समस्या नाटककार के रूप में इन्हें विशेष ख्याति प्राप्त है। वे प्रमुखतः भारतीय संस्कृति के कुशल शिल्पकार हैं। इनके नाट्य्-साहित्य में भारतीय संस्कृति का आदर्श रूप एवं पाश्चात्य-साहित्य का यथार्थ रूप का सुन्दर संगम हुआ है। वे एक युगांतकारी नाटककार हैं।

आरंभ से ही मुझे "नाटक" विधा में रुचि रही है। समस्त जीवन एक युद्धभूमि है। इसलिए हर-जगह संघर्ष है। इसी संघर्ष की अभिव्यक्ति नाट्य्-कृति है। मानव-संघर्ष की अभिव्यक्ति हम नाट्य्-रूप में देखकर तल्लीन हो जाते हैं और उसकी छाप अपने हृदय-पटल पर अंकित हो जाती है। नाटक एक अनुकरण की कला है। किन्तु उसीका ही अनुकरण किया जाता है, जो स्वाभाविक लगे, जिसमें वास्तविकता के दर्शन हो, न कि कहानी, उपन्यास तथा अन्य विधाओं की तरह काल्पनिक हो। इसे पढ़कर हम भूल जाते हैं, लेकिन नाटक अभिनय होने से हमारे भीतर एक हलचल-सी उत्पन्न होती है। यथार्थ की अभिव्यक्ति इसमें होने से अपना ही लगता है। स्वयं की अनुभूति की अभिव्यक्ति इसमें निहित होती है। नाटक में प्राचीन काल की सभी तत्कालीन परिस्थितियों का स्वरूप स्पष्ट होता है। उस समय के लोगों की वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान के साथ धर्म, नीति, दर्शन तथा भारतीय संस्कृति के विराट रूप आदि

के दर्शन हम इस दृश्य विधा में देख सकते हैं। इसलिए हिन्दी साहित्य में "नाटक" विधा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। नाटक विधा पर स्वतंत्र रूप से शोधकार्य भी हुआ है। अतः मेरी दृष्टि से लघु-शोध प्रबंध के लिए "नाटक" विधा का चुनाव उचित रहा है।

हिन्दी साहित्य का इतिहास का अध्ययन करने से पता लगता है कि हमारे यहाँ प्राचीन काल से नाट्य-प्रवृत्ति विद्यमान है। इस संस्कृति-प्रधान देश में सांस्कृतिक खेल प्रारंभ से ही खेले जाते थे। आगे चलकर इन्होंने नाटक रूप धारण किया। आधुनिक काल में अन्य विधाओं की तरह नाट्य-विधा का विकास भी द्रुत गति से हुआ। ऐतिहासिक, पौराणिक तथा सांस्कृतिक आदि विभिन्न रूपों में नाटक लिखे गये। जिस तरह समय बदलता गया उसी तरह नाटक का क्षेत्र विस्तृत तथा उसमें परिवर्तन होता गया। आज का बुद्धिवादी मानव अतीत के चित्रों को देखकर उस आदर्श को पुनः स्थापित नहीं करना चाहता बल्कि यथार्थ को अपनाता है। वह अनेक समस्याओं से बूरी तरह से ग्रस्त हुआ है। मनुष्य अपने ही समस्या में उलझ गया है। उसका जीवन ही एक प्रश्न चिह्न बनकर रह गया है। वह तर्क-वितर्क कर अपने समस्या का हल खोजता रहता है, ताकि उससे छुटकारा पा सके। आज अपना देश, तथा मानव स्वतंत्र है। लेकिन समस्याओं के जंजीरों ने मानव को जखड लिया है। वह बाह्य संघर्ष को तो मिटा सकता है, किंतु आंतरिक संघर्ष को कहाँ तक छुपाता फिरेगा ? शायद इससे मुक्ति पाने के लिए ही आधुनिक युग में समस्या-नाटक विधा का अविर्भाव हुआ। हिन्दी साहित्य में लक्ष्मीनारायण मिश्र ने "सँन्यासी" सर्व प्रथम समस्या नाटक लिखा। इसके उपरान्त मिश्रजी ने पाँच समस्या नाटकों की रचना की। इनमें से "सिंदूर की होली" एक प्रौढ तथा सामाजिक समस्या-प्रधान नाटक है। तब मेरे मन में बड़ी जिज्ञासा निर्माण हुई, क्या मिश्रजी ही समस्या नाटक के उद्‌भावक हैं ? आधुनिक एवं चिरन्तन नारित्व की समस्या उनके नाटकों की देन है ? पाश्चात्य विचारधारा का प्रभाव इन पर होने से यथार्थता का प्रयोग कहाँ तक सफल हुआ है ? क्या नारी को केंद्र बनाकर विभिन्न समस्याओं

को प्रस्तुत किया है। क्या इनके पात्र अंतर्द्वंद से पीड़ित हैं ? इनके अन्य समस्या नाटक तथा "सिंदूर की होली" की आत्मा क्या भारतीय है ? सचमुच मिश्रजी ने हिन्दी नाट्य-विधा को एक नवीनतम दिशा प्रदान की है ? आदि अनेक प्रश्न मेरे मस्तिष्क में मंडराने लगे। तब मैंने "सिंदूर की होली की समस्याओं" का अनुशीलन करना अपना आत्मिक समाधान माना।

लघु-शोध प्रबंध का विषय "सिंदूर की होली की समस्याएँ" है। अभी तक लघु शोध-प्रबंध की दिशा में लक्ष्मीनारायण मिश्र के प्रकाशित समस्या नाटकों के बारे में शोध-कार्य हो चुका है, किंतु स्वतंत्र रूप से "सिंदूर की होली" विषय में शोधकार्य नहीं हुआ है। अतः उनके "सिंदूर की होली" की समस्याओं का अनुशीलन हमारा प्रमुख उद्दिष्ट रहा है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध चार अध्यायों में विभाजित है -

प्रथम अध्याय : "हिन्दी नाटकों के विकास की रूपरेखा"

प्रथम नाटक शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ बताते हुए संस्कृत नाटक, रासलीला नाटक, लोकधर्मी नाट्य आदि प्राचीन नाटकों के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। नाटक-विधा के विकास-क्रम को भारतेन्दु पूर्व युग, भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, प्रसाद युग और प्रसादोत्तर युग इन पाँच काल में विभाजित करते हुए स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक और नाटककार का उल्लेख किया गया है। नाट्य-विधा के विभिन्न रूप - एकांकी नाटक, गीतिनाट्य, रेडियो और दुरदर्शन नाटक, प्रतीक नाटक और समस्या नाटक का परिचय दिया गया है। समस्या नाटक के विकास-क्रम को स्वतंत्र रूप से स्पष्ट किया गया है।

द्वितीय अध्याय : "मिश्रजी के नाट्य साहित्य का परिचय

इनमें लक्ष्मीनारायण मिश्र का जन्म, परिवार, बचपन, शिक्षा एवं साहित्यिक प्रेरणा तथा इनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनका जीवन-परिचय प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही समस्या नाटककार के रूप में मिश्रजी

की भूमिका स्पष्ट की है तथा उनके नाटकों की विशेषताओं का उल्लेख किया गया है। मिश्रजी के सामाजिक समस्या-प्रधान नाटक, संस्कृति-प्रधान ऐतिहासिक और पौराणिक नाटकों की कथावस्तु संक्षिप्त में बताते हुए इनमें निहित समस्याओं को प्रस्तुत कर उनके नाट्य-साहित्य का परिचय दिया गया है।

तृतीय अध्याय : "सिंदूर की होली" नाटक के अंतर्गत समस्याएँ

इसके अंतर्गत "सिंदूर की होली" नाटक की कथावस्तु को तीन अंको में विभाजित कर उसका विवेचन किया है। इनमें व्यक्तिगत और समाजगत समस्याओं का उल्लेख किया गया है। इसमें पट्टीदारों की कलह, कानून द्वारा सुरक्षा, चिरंतन नारीत्व, विधवा-विवाह, विवाह, स्वच्छंद प्रेम, काम, अंतर्द्वंद या मानसिक संघर्ष, रोग के उपचार, बुद्धिवादी, भावुकता, अर्थलोलुपता, रिश्वतखोरी और कला आदि की समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया गया है। नाटक की सार्थकता एवं महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : "उपसंहार"

उपसंहार के रूप में अनुशीलन के निष्कर्ष को प्रकट करने का यथातथ्य प्रयास किया है। नाट्य-साहित्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए मिश्रजी के नाट्य-साहित्य पर प्रकाश डाला गया है। "सिंदूर की होली" की समस्याओं का अंकन यथार्थ रूप में स्पष्ट करते हुए उसकी वास्तविकता को प्रकट किया है।

कृतज्ञता-ज्ञापन

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लेखन में मुझे जिनसे सहयोग मिला, उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मै अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। सर्वप्रथमतः मैं उन समस्त लेखकों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ, जिनकी रचनाओं का प्रयोग मैंने सहायक ग्रंथों के रूप में किया है।

इस लघु-शोध-प्रबंध के लेखन कार्य में मुझे मार्गदर्शन करनेवाले श्रद्धेय डॉ·व्यं·वि·द्रविडजी के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद उन्होंने हर समय बड़ी तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है। अतः मैं उनका हृदय से ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध-कार्य में मुझे आदरणीय डॉ·वसंत मोरे, प्रा·जे·बी·नीलकंठ, श्री·सुनील सुतार और प्रा·सौ·ज्योती गायकवाड आदि की सहायता प्राप्त हुई। अतः मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

मेरे आदरणीय पिताजी श्री·ज्ञानदेव मारुती गायकवाड, स्नेहशील माताजी सौ·पार्वती गायकवाड, श्री·शंकर मारुती गायकवाड, सौ·शालन गायकवाड इन सबकी कृपा से ही यह शोध-कार्य संपन्न हो सका।

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल और अन्य ग्रंथपाल सदस्य इन्होंने मुझे सहायक ग्रंथ पाने की सुविधा दी। मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ। और अंत में यह शोध-प्रबंध अत्यंत कम समय में टंकित करनेवाले रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री·मुकुन्द ढवळेजी, श्री·सुशीलकुमार कांबळेजी और बाळकृष्ण कुलकर्णीजी के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ।

कोल्हापुर

30 जून, 1994

(श्री·प्रकाश ज्ञानदेव गायकवाड)
एम्· ए·बी·एड्·